Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.278, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, AUG-SEPT, 2021, VOL-9/47

अकबर के शासन काल में हरियाणा की कृषि व्यवस्था का अध्ययन

Dr. Anita Kumari

Associate Professor, Shyama Prasad Mukherjee College, New Delhi West Punjabi Bagh-110026. Email- anitamadam020@gmail.com

Paper Received On: 25 SEPT 2021

Peer Reviewed On: 30 SEPT 2021

Published On: 1 OCT 2021

Abstract

प्राचीन काल से ही हरियाणा एक कृषि प्रधान क्षेत्र रहा है, क्योंकि इस क्षेत्र की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी थी क्योंकि अधिकाशंत जनता प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप कृषि पर निर्भर रहतीं है। वेदों और पुराणों मे भी इसे एक समृद्ध, सम्पन्न और धन–धान्य से सम्पूर्ण क्षेत्र कहा गया है। प्राचीन काल की तरह सल्तनत काल में किसान द्वारा जो फसल उगाई थी, उसके अर्न्तगत विभिन्न पहलू काम करते थे जैसे, भूमि के प्रकार, अपज की क्षमता, बीज किसान द्वारा की प्रकृति आदि बातों का ध्यान रखना पड़ता इसके अतिरिक्त फसलें उगाने प्रक्रिया, सिचाई के साधन, कृशि औजारों की गुणवता आदि बातें काम करती थी। परन्तु समय के परिवर्तन के साथ–साथ इन सब में परिचर्तन आने लगा सल्तनकाल की अपेक्षा मुगलकाल में खासकर अकबर के काल में कृशि व्यवस्था में सुधार करके अधिक से अधिक भूमि को उपजाऊ बनाया गया।

कुंजी शब्द, *पोलज, परोती, छच्छर, बंजर, खरीफ, रबी, अराजी' मन–ए–अकबरी, बिघा, बिसवा, बिसवास*

प्रस्तावना

भौगोलिक स्थिति के कारण हरियाणा की मिट्टी भिन्न–2 प्रकार की रही है, जिसका प्रभाव हरियाणा पर भी पड़ता रहा है । इस क्षेत्र के उत्तर में हिमालय पर्वत, दक्षिण में अरावली श्रृखंला, दक्षिण–पश्चिम में राजस्थान का मरूस्थल पूर्व में गंगा दोआब का क्षेत्र तथा यमुना नदी का क्षेत्र आता है । जिसके कारण ही यहां पर, उपज, उपज के प्रकार तथा कृषि भिन्न–2 प्रकार की रही है ।[1] इस क्षेत्र का उत्तरी भाग जिसके अन्तर्गत पंचकूला, अम्बाला, पिजौर, कुरुक्षेत्र, करनाल, पानीपत क्षेत्र पर हिमालय का प्रभाव पड़ता था, जिससे यहॉ पर वर्षा की भी अच्छी प्रकार होती थी, और यहाँ की भूमि नरम होने कारण भूमि अधिक उपजाऊ है ।[2]

[1] इरफान हबीब एण्ड तपन राय चौधरी, *द् कैम्ब्रिज इकॉनामिक हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, जिल्द प्रथम,* कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस, दिल्ली 1993, , पृष्ठ 48–51

[2] एच. ए. फड़के, *हरियाणा एन्सिंट एण्ड मिडिवल,* नई दिल्ली, 1990, पृष्ठ 1

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

दक्षिण क्षेत्र जिसमें, हरियाणा का नारनौल, रेवाड़ी, महेन्द्रगढ का क्षेत्र आता था, की सीमाएँ राजस्थान से मिलने कारण यहाँ की मिट्टी में रेतीलापन मिलता है ।[3] इस क्षेत्र के पूर्व तथा पश्चिम में भी भौगोलिक स्थिति के कारण भूमि की भिन्न–2 किस्में पाई जाती हैं, जो इस क्षेत्र के राजनैतिक, सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टि को प्रभावित करती है । परन्तु समय के परिवर्तन के साथ तथा अनेक साधन उपलब्ध होने के कारण अधिक से अधिक बेकार पड़ी भूमि को भी कृषि योग्य बनाया गया ।[4]

इस क्षेत्र के प्रत्येक भाग की भूमि की किस्म भी अलग–2 प्रकार की थी, भूमि की किस्म अलग होने कारण उसमें उगने वाली खेती भी अलग प्रकार की होती थी । सल्तनत काल में (उपजाऊपन) भूमि की या भूमि के उपजाऊपन के आधार पर तीन भागों में बॉटा हुआ था जैसे, उच्च, मध्यम और निम्न । जिसके बारे में बरनी की 'तारीख–ए–फिरोजीशाही' अफीक की 'तारीख–ए–फिरोजशाही' तथा बरनी द्वारा 'फतुहात–ए–फिरोजशाही' से पता चलता है कि अधिक से अधिक भूमि पर खेती करने की प्रयास किए गए ।[5]

मुगल काल के आरम्भिक वर्षो तक भूमि की स्थिति यही रही, परन्तु अकबर द्वारा किसानों की दशा सुधारने के लिए समय–समय पर विभिन्न प्रयास किए गए। उन्होंनें अपने शासन काल के 13वें वर्ष में सम्पूर्ण भूमि को खालसा भूमि में बदल दिया गया तथा शाहबुदीन को 'दिवान–ए–खालसा' नियुक्त कर दिया गया ।[6] उसके भाासनकाल में अधिक से अधिक भूमि को उपजाऊपन के आधार पर भूमि को चार किस्मों में बॉटा गया । उससे पूर्व जिस भूमि को जागीरो में बॉटा हुआ जाता परन्तु अकबर द्वारा अपने शासन के 15वें वर्ष में अपने वित मंत्रियों मुज्जफर खां, टोडर मल, तथा शाह मंसूर की सहायता से भूमि के उपजाऊपन के आधार पर भूमि को चार भागों में विभाजित करवाया, जिसे पोलज, परौती, छच्छर और बंजर भूमि कहा जाता था । इन भूमियों से सम्बन्धित सर्वप्रथम जानकारियों हमें *आईन अकबरी* से मिलती हैं । अतः उपजाऊपन के आधार पर इन स्थिति अलग–2 थी ।[7]

पोलज :– पोलज उत्तम दर्जे की भूमि होती थी जिसमें हर प्रकार की फसल उगाई जाती थी ।

परोती :– परोती पोलज से निम्न दर्जे की भूमि होती थी, जिसको कुछ समय के लिए खाली छोड़ा जाता था, ताकि यह अपनी उर्वरा शक्ति को पुनः प्राप्त कर सके ।

---

[3] चेतन सिंह, *रिजन एण्ड एम्पायर,* अक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रैस 1991, पृष्ठ 96

[4] हमिदा खतुन नकवी, *एग्रीकल्चर, इन्डस्ट्रीयल एण्ड अर्बन डाईनामिज्म अण्डर द सुल्तान* आफ देहली, देहली 1986, पृष्ठ 12

[5] वही पृष्ठ 14

[6] यु. एन. डे. *मुगल गर्वनमैंट,* दिल्ली 1994, पृष्ठ 114

[7] अबुल फजल आइने अकबरी जिल्द द्वितीय, कलकता 1949, पृष्ठ 68ः वी. ए. स्मिथ, अकबर द ग्रेट मुगल दिल्ली 1966, पृष्ठ, 82–83

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

छच्छर :– इस भूमि की उर्वरा शक्ति पोलज और परोती भूमि से कम होती थी । इस भूमि को तीन या चार वर्ष के लिए खाली छोड़ दिया जाता था ।[8]

बंजर :– बंजर सबसे निम्न दर्जे की भूमि होती थी। इस भूमि को कई वर्षो के लिए खाली छोड़ दिया जाता था तथा ऐसी भूमि में पैदावर भी बहुत कम होती थी। अकबर द्वारा अपने शासन काल बहुत बंजर भूमि को उपजाऊ बनाया गया ।[9] जिससे अधिक से अधिक भूमि पर खेती की जा सकें ।

जहां तक हम फसले उगाने की बात करते है तो भूमि पर विभिन्न प्रकार की फसलें उगाने कि यह प्रक्रिया प्राचीन काल से ही चलती आ रहीं है । हालांकि समय के साथ–2 नई फसलों को भी उगाया जाने लगा । सल्तनत काल में खासकर, फिरोज भााह तुगलक के शासन काल में, 25 प्रकार की *रबी* की तथा 14 प्रकार की *खरीफ* के फसलों को उगाने के बारे में जानकारी मिलती है । इब्नबतूता द्वारा अपनी पुस्तक में विभिन्न प्रकार की फसलों का वर्णन दिया गया है, जिसे *खरीफ* तथा *रबी* की फसलें कहा जाता था।[10]

जिससे उसने वर्णन किया है, कि किसान द्वारा एक वर्ष में एक ही भूमि पर कितनी फसल उगाई जाती थी, तथा किसानों को अधिक से अधिक फसल उगाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था । दिल्ली शासकों द्वारा बहुत बेकार पड़ी भूमि को कृषि योग्य बनाया ।[11]

अकबर से पूर्व इन फसलों की स्थिति में कोई अन्तर नहीं था, परन्तु उसके शासन काल में सल्तनत काल की अपेक्षा अधिक से अधिक फसलों को उगाया जाने लगा ।[12]

'आइने अकबरी' में अबुल फजल द्वारा अकबर के शासन काल के जिन 12 सूबों का वर्णन किया गया है, इन सुबों के अन्तर्गत हरियाणा का क्षेत्र भी आता था। आइने अकबरी' के अनुसार अकबर के शासन काल में सम्पूर्ण उपजाऊ क्षेत्र में से केवल 3/4 भाग पर ही खेती की जाती थी उसे 'अराजी' कहा जाता था ।[13] सम्पूर्ण भूमि क्षेत्र को *जमीन–ए–पाइमुंदा* कहा जाता था।[14]

अकबर के शासन काल के 19वें वर्ष के पश्चात फसलों की स्थिति में सुधार होने लगा और किसानों द्वारा अधिक से अधिक भूमि को उपजाऊ योग्य बनाया गया । समकालीन लेखकों और इतिहासकारों के विवरण

---

8 वही, पृष्ठ 86

9 मोरलैण्ड, *द एग्रेरियन सिस्टम आफ मुस्लिम इंडिया,* दिल्ली 1968, पृष्ठ 88,

10 इब्नबतूता, *रहेला,* अनुवादित मेहदी हुसैन बडौदा 1953, पृष्ठ 18–19

11 इरफान हबीब और तपनराय चौधरी, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ, 51

12 अबुल फजल, *अकबरनामा,* जिल्द द्वितीय अनुवादित एच. ए. बेवीरज, पृष्ठ 617

13 सीरीन मुसवी, *इकोनोमी आफ द मुगल एम्पायर,* देहली 1987, पृष्ठ 39

14 मोरलैण्डः, *अकबर की मृत्यु के समय का भारत,* दिल्ली 1996, (प्रथम संस्करण, 1976), पृष्ठ 93

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

के आधार पर कह सकते है कि उसके शासन काल में रबी और खरीफ की कितनी फसलों को उगाया जाता था ।

अबुल फजल के अनुसार अकबर के भाासनकाल में *खरीफ* की 28 तथा *रबी* की 32 प्रकार की फसलों का वर्णन किया है, जो एक ही प्रकार की भूमि पर विभिन्न अलग–2 समयों में उगाई जाती थी ।[15]

इन फसलों को राजपूत, अहीर, जाट, मेव, अफगान, मुसलमान इत्यादि जातियों द्वारा उगाया जाता था, जो गांव में रहकर ही खेती करती थी ।[16] खरीफ की फसलों को 'सावण' की फसल तथा रबी की फसलों को असाढ़ी की फसल कहा जाता था। निम्नलिखित तालिका के आधार पर 'रबी' और खरीफ की फसलों की गणना की जा सकती है[17]:–

***खरीफ* की फसलें (सावण की फसलें)**

अनाज	**दालें**	**सब्जियाँ**	**अन्य**
चावल	मूंग, मोठ,	टमाटर, बैंगन	गन्ना
ज्वार	चोला, उड़द	भिण्डी, मिर्च	कपास
बाजरा	कुल्थ, अरहर,	प्याज, करेला	गुआर
मकई	बटुला, शीशम बीज	मटर, आलू	तिल, सिंघाडा,

***रबी* की फसलें(असाढी की फसलें)**

अनाज	**दालें**	**सब्जियाँ**	**अन्य**
गेंहू	मूंग, चना,	प्याज, लहसून, बन्दगोभी	तोरिया
	गोचनी, अजवायन	ककडी, खीरा, बैंगन,	
		गिया, तोरी	जीरा, राई
		कददू, टींडा,	तम्बाकू
		शिमला मिर्च	पोस्त, सेम

शीशम बीज, लोंग, इलायची, तिलहन की खेती बहुत कम मात्रा में की जाती थी, क्योकि इन फसलों की किमतें अधिक थी ।[18] हर फसल की अपनी अलग–2 स्थिति होती थी तथा इन फसलों को उत्पादित

[15] टबुल फजल, *आइने अकबरी,* जिल्द द्वितीय, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 104–105
[16] डी. एन. मलिक, *मिडिवल एट्रीशन आफ ए रिजन,* रोहतक, 1982, पृष्ठ 32–33
[17] *आइने अकबरी,* पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 110–111
[18] डी एन मलिक पूर्वउद्धृत, पृष्ठ 32

करते वक्त किसान द्वारा भूमि का प्रकार, अपज की क्षमता, बीज की प्रकृति आदि बातों का ध्यान रखना पड़ता था ।[19]

हर फसल की अपनी स्थिति, समय तथा प्रकार होता था । इन फसलों को किसानों द्वारा अपने परिवार की सहायता से उगाया जाता था तथा यह किसान पर निर्भर करता था, कि उसे कौन की फसल की खेती करनी है । यानि ये कहा जा सकता है, कि फसल उगाने के लिए किसान पूर्ण स्वतन्त्र था ।[20] फसल की गुणवता और मात्रा भूमि की गुणवता पर आधारित थी । किसान द्वारा फसलों को उगाने के लिए लगभग उन्ही तरीकों तथा विधियों का प्रयोग किया जाता था जो उसके पूर्व से चलती आ रहीं थी ।[21] अकबर के शासन काल में प्रत्येक फसल की स्थिति का निम्नलिखत वर्णन किया गया है ।

गन्ना :– गन्ना मुख्यतः सम्पूर्ण हरियाणा में उगाया जाता था । आइने अकबरी में अबुलफजल द्वारा गन्ने की दो किस्मों का वर्णन किया है साधारण तथा पोडां । गन्ना एक किमती फसल थी गन्ने द्वारा 'चीनी' तथा गुड को बनाया जाता था[22] । महम करनाल, पानीपत, रोहतक, हिसार–फिरोजा, इन्द्री, कुरुक्षेत्र में गन्ने का उत्पादन अधिक किया जाता था ।[23]

नील :– नील एक व्यापारिक फसल थी जिसको थानेसर, मेवात, झज्जर में उगाया था । यह अधिक कीमती फसल होने की वजह से बहुत कम क्षेत्र में उगाई जाती थी ।[24]

चावल :– चावल की खेती करनाल, पानीपत, पलवल, इन्द्री, थानेसर, सिरसा, हिसार इत्यादि क्षेत्रों मे की जाती थी । 1325 ई0 में इब्नबतूता द्वारा अपनी पुस्तक 'रहेला' में सिरसा, हिसार, फिरोजा के आस पास के क्षेत्रों में चावल की खेती की प्रंशसा की है । उसके अनुसार ''सिरसा में अच्छी किस्म का चावल उगाया जाता था'' ।[25] अबुल फजल के अनुसार चावल की दो किस्में थी, 'कुर तथा शली' ।[26]

कपास :– कपास की खेती के लिए काली मिट्टी की आवश्यकता पड़ती थी और जो हरियाणा के दक्षिण–पश्चिम भागों में जैसे, सिरसा, हिसार, रतिया, फतेहाबाद के क्षेत्र में पाई जाती थी, जिससे इन क्षेत्रों में कपास की खेती अधिक की जाती । यह भी एक व्यापारिक फसल थी जिसका प्रयोग कपड़ा बनाने के लिए कच्चे माल के रूप में किया जाता था ।[27]

---

[19] आई एच कुरैशी, *एडमिनीस्ट्रेशन आफ द मुगल एम्पायर,* पटना 1979, पृष्ठ 286
[20] नीलम चौधरी, *सोसियो इकोनोमिक हिस्ट्री आफ मुगल इंडिया,* दिल्ली 1987, पृष्ठ 101
[21] मोरलैण्ड, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 96
[22] ओम प्रकाश, *भारत का आर्थिक इतिहास, इलाहाबाद,* 1977, पृष्ठ 24
[23] हरियाणा स्टडीज जरनल, कुरुक्षेत्र 1987, पृष्ठ 85–87
[24] वही, पृष्ठ 86–87
[25] इब्नबतूता, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 18–19
[26] अबुल फजल, *आइने अकबरी,* जिल्द दो, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ, 111–113
[27] अब्दुल कादिर बदायूनी, *मुन्तख्वब उत–तवारिख,* जिल्द द्वितीय, अनुवादित डब्लयू एच. ला, दिल्ली 1925, पृष्ठ 36

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

चना :– चने की खेती के लिए ज्यादा वर्षा की आवश्यकता नहीं होती थी यह अधिकतर महेन्द्रगढ, रेवाडी, नारनौल, गुडगॉव, दादरी, भिवानी तथा रोहतक में उगाया जाता था क्योकि यहॉ की मिट्टी इस फसल के लिए उर्पयुक्त थी । अबुलफजल द्वारा चने की दो किस्मों का वर्णन किया गया है– काला तथा काबुली चना । ये दोनों किस्म हरियाणा में उपलब्ध थी ।[28] ज्वार, बाजरा, मूठ आदि फसले भी इसी भूमि पर उगाई जाती थी ।

गेहूं :– गेहूं की खेती भी हरियाणा के काफी हिस्सों में की जाती थी परन्तु करनाल, पानीपत, कुरुक्षेत्र में अच्छी किस्म का गेहूं उगाया जाता था ।[29]

अनाज, सब्जियों तथा दालो के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के फल तथा फूलों की खेती भी की जाती थी । आम, जामुन, बेर, अमरूद, लिची, चीकू आदि फलों की खेती की जाती थी । इन फलों तथा फूलों को भी उसी भूमि पर उगाया जाता था, जिस पर विभिन्न दालें, अनाज तथा सब्जियों को उगाया जाता था ।[30] इब्नबतूता के विवरण से पता चलता है फिरोजशाह तुगलक द्वारा दिल्ली के आसपास के क्षेत्रों में किसानों को अंगूर तथा खजूर की खेती करने के लिए अधिक से अधिक प्रोत्साहित किया गया ।[31] उसके द्वारा दिल्ली के आसपास के क्षेत्रों में 1200 बगीचो का निर्माण करवाया गया । जिसमें विभिन्न प्रकार के फल, आम, अमरूद, जामुन, बेर, लिची उगाए जाते थे ।[32]

इसके अलावा मुगलों शासको द्वारा भी फलों तथा फूलो की खेती को बढावा दिया गया । अकबर के शासन काल में मुख्यतः उन्ही फलों तथा फूलो की जो बाबर उगाए जाते थे ।[33] उसके शासन काल में फूलों जैसे गुलाब, गेंदा, चमेली, आदि की खेती जाती थी क्योकि इनसे भी राज्य को आय प्राप्त होती थी । किसी भी धार्मिक उत्सव को फूलों के बिना अधूरा माना जाता था ।[34] जहांगीर के काल में पिंजौर में अनेक फल तथा फूलो की खेती का वर्णन मिलता है । फूल द्वारा एक सुगन्धित पदार्थ 'इत्र' बनाया जाता था । जिसका प्रयोग केवल धनी परिवार के लोगो द्वारा ही किया जाता था ।[35] अतः जब जहागीर के काल 'इत्र' का प्रयोग किया जाता था जिससे यह अन्दाजा लगाया जा सकता है कि इसका प्रचलन अकबर के काल में भी शुरू होगा ।

---

[28] वही पृ0, 112–113,
[29] एच. ए. फडके, *हरियाणा एन्सिंएट एण्ड मिडिवल,* पृष्ठ, 133
[30] इरफान हबीब एंव तपनराय चौधरी, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ– 53
[31] इब्नबतूता, रहेला, पृष्ठ, 16–17
[32] एम. अशरफ– *हिन्दुस्तान के निवासियो का जीवन मारे परिस्थितियाँ,* दिल्ली 1969, पृष्ठ 120– 123
[33] मोरलैण्ड, *अकबर की मृत्यु के समय का भारत,* दिल्ली,, 1996,(प्रथम संस्करण 1976) पृष्ठ 93
[34] के एम. अशरफ, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 124
[35] हरियाणा जरनल स्टीडज पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 86

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

किसान द्वारा खेतो में फसल उपजाने का कार्य मानसून से पूर्व ही शुरू कर दिया जाता था । इन फसलों की बुआई कटाई, तथा निराई का तरीका बिल्कुल अलग होता था ।[36] मार्च, अप्रैल में गन्ने की बुआई की जाती थी तथा इसी समय खरीफ की फसलों को बोया जाता था । इसके अतिरिक्त कुछ *रबी* की फसलों जैसे गेहूं, जौं, सरसो, आदि की कटाई भी की जाती थी तथा साथ–2 रबी की फसलों को घरों में लाया जाता था । जून जुलाई में वर्षा के उपरान्त बाजरा, मकई, दाले, गुआर आदि की सितम्बर, अक्टुबर में फसलों की बुआई की जाती थी तथा अगले दो महीनो नवम्बर, दिसम्बर में *खरीफ* की फसलों को काट लिया जाता था ।[37]

जिससे अन्दाजा लगाया जा सकता है, कि किसान लगभग 10 महीने खेत में कार्य करता था तथा किसान द्वारा आगे बोने वाली फसलों के लिए खेत को तैयार कर लिया जाता था ।[38]

अकबर के शासन काल में जैसे कि हम जानते है कि कुल भूमि के 3/4 भाग पर खेती की जाती थी । जिसको 'अराजी' प्रत्येक भूमि को उपजाऊपन के आधार पर भिन्न भिन्न बीघों में बांटा हुआ था । बीघों को आगे बीस भागो में बांटा जाता था,

जिसको *बीसवा* कहा जाता था । *बीसवे* को आगे बीस भागो में बांटा जाता था, जिसको *विसवास* कहा जाता था । प्रत्येक बिघे को *इलाही* बिघा कहा जाता था । जिसको मापने के लिए बांस की *जरीब का* प्रयोग किया जाता था । क्योकि अकबर से पूर्व प्रचलित जरीब जो रस्सी की बनी होती थी, जिसका टूटने तथा सिकुडने का डर रहता था बांस के जरीब के दोनों ओर दो लोहे के छल्ले लगे होते थे । इस जरीब में 40 अंगुल गज का माप था । क्योकि इससे पूर्व प्रचलित जरीब में रस्सी का प्रयोग होता था जो मौसम के अनुरूप घट–बढ जाती थी अतः अकबर ने इसमें लोहे का प्रयोग किया ।[39] प्रत्येक बिघे में उत्पादित फसल का निदान जिसको *मन–ए–अकबरी* कहा जाता था । एक मन 13 या 14 *सेर* का होता था ।

अकबर के शासन काल में हरियाणा क्षेत्र का कुछ भाग आगरा सुबे के अन्तर्गत, कुछ सरहिन्द सरकार के तथा बहुत बड़ा क्षेत्र दिल्ली सुबे के अन्तर्गत आता था ।[40] उक्त प्रणाली के आधार पर प्रत्येक ग्राम परगने तथा प्रान्त की कृषि योग्य भूमि की पैमाइश की गई ।[41] अकबर के शासन काल में विभिन्न सरकारों जैसे नारनौल, रेवाड़ी, हिसार, फिरोजा में निम्नलिखित क्षेत्र पर खेती की जाती थी ।[42]

---

[36] हमिदा खातुन नकवी पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 13
[37] के. सी. यादव, हरियाणा : *इतिहास एवं संस्कृति*, दिल्ली 1990, पृष्ठ 396
[38] वही पृष्ठ, 14
[39] अबुल फजल पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 65–66
[40] आर्शीवाद लाल श्रीवास्तव, पूर्व उद्धृत, पृ0 9–11
[41] सीरीन मुसवी, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 39
[42] वही, पृष्ठ, 24–25

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

अरजी (बिघा या बिसवा)

सरकार / परगना	**बिघा**
नारनौल	20,80,046
रेवाड़ी	11,55,001
हिसार, फिरोज	31,14,497
सरहिन्द	77,29,46,617

आइने अकबरी में अबुल फजल द्वारा अकबर के शासन काल में किस सुबे के अन्तर्गत कौन सी सरकार में कितना उत्पादन किया जाता था, उसका विवरण दिया गया है । उसके शासन काल में नारनौल, आगरा, रेवाड़ी तथा हिसार फिरोजा दिल्ली सुबे के अन्तर्गत आते थे ।[43] इसके अलावा अकबर के शासन काल में भूमि की किस्म के हिसाब से उपज परिणाम भी अलग–2 होते थे जिनका दाम, सेर, तथा मन के माध्यम से अन्दाजा लगाया जाता था जिसका वर्णन निम्नलिखित किया गया है :–

मन–ए–बिघा

मन–ए–अकबरी । प्रति बिघा–ए–इलाही

अनाज	**उतम भूमि**	**मध्यम भूमि**	**निकृष्ठ भूमि**	**प्रति बिघा औसत उपज मन या**
गेहूं	18 मन	12 मन	8 मन 35 सेर	12 मन 38.25 सेर
मसूर	8 मन से 10 सेर	6 मन 20 सेर	4 मन से 25 सेर	6 मन से 18.05 सेर
जौ	18 मन	12 मन 20 सेर	8 मन 15 सेर	12 मन से 38.25 सेर
अलसी	6 मन 20 सेर	5 मन 10 सेर	3 मन 30 सेर	5 मन से 7 सेर
रूई	10 मन	7 मन 20 सेर	5 मन	7 मन 20 सेर
चना, मटर	13 मन	10 मन 20 सेर	8 मन 25 सेर	10 मन 23 सेर
कुर धान	24 मन	18 मन	14 मन 20 सेर	18 मन 30 सेर
मामूली धान	17 मन	12 मन 20 सेर	9 मन 15 सेर	12 मन 38.5 सेर
मूंग	10 मन 20 सेर	7 मन 20 सेर	5 मन 10 सेर	7 मन 30 सेर
उड़द	,,	,,	,,	,,
ज्वार	13 मन	10 मन 20 सेर	7 मन 20 सेर	10 मन 13.5 सेर

ऊपर लिखित तालिका के आधार पर अन्दाजा लगाया जा सकता है कि प्रतिबिघे के हिसाब से उपज के क्या परिणाम थे ।[44]

43 अबुल फजल, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 295–298

44 वही, पृष्ठ, 295–298